नवम्बर 2025, अंक 11 वर्ष 02

cinemahaul

फ़िल्म ईज़ीन

सिनेमाहौल

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण: आर वर्क

सरल कलाकार, विरल फिल्मकार राज कपूर

अखिलेश कुमार मौर्य, अजय पारिख, इक़बाल रिज़वी, इंद्रजीत सिंह, जवरीमल्ल पारख, नीति सुधा, नीलम कुलश्रेष्ठ, प्रफुल्लचंद्र ठाकुर, मंजीत ठाकुर, विजय पाडलकर, विनोद अनुपम, सैयद एस तौहीद, सूर्यन मौर्य, ज़ेब अख़्तर, हितेंद्र पटेल

स्मृति : धर्मेंद्र

नवम्बर 2025

वर्ष 02, अंक 11

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: सरल कलाकार, विरल फ़िल्मकार: राज कपूर

कवर: रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 4

'आवारा' से सोवियत संघ तक लोकप्रिय हो गए राज कपूर 6

अखिलेश कुमार मौर्य

राज कपूर : एक ख़्वाबों का सौदागर 11

अजय पारिख

"मेरा नाम जोकर" की असफलता ने बदल दिया नजरिया 17

इक़बाल रिज़वी

रूस में राज कपूर की लोकप्रियता 24

इन्द्रजीत सिंह

फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी 35

जवरीमल्ल पारख

राज कपूर को जानना शैलेन्द्र के गीतों के माध्यम से 76

नीलम कुलश्रेष्ठ

राजकपूर का नारी सौन्दर्य 87

प्रफुल्लचन्द्र ठाकुर

मेरा नाम राजू … 92

विजय पाडलकर

अनुवाद-मनमोहन चड्ढा

राज कपूर 111

सैयद एस तौहीद

राजनीतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि : नेहरू का भारत और सिनेमा 126

सूर्यन मौर्य

सरहदें लकीरें खींचती रहीं, लेकिन राज कपूर हर नक्शे में रहे 139

जेब अख्तर

राज कपूर की करियर में आर्थिक संकट और उनसे निकलने की कहानी 163

जेब अख्तर

राज कपूर पर लिखी किताबें 181

'मुझे लफ़्ज़-ए फिल्म से मोहब्बत है-धर्मेन्द्र 184

नीति सुधा

मारे तो धरमिन्दर 191

मंजीत ठाकुर

धर्मेन्द्र 199

विनोद अनुपम

हिंदी लोकप्रिय सिनेमा का अंतिम राष्ट्रीय हीरो धर्मेन्द्र थे 204

हितेन्द्र पटेल

मेरी बात

हर महीने के अंत तक आपके स्क्रीन पर नियमित रूप से नमूदार हो रहे सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के नवंबर, 2025 का अंक लगभग साढ़े तीन महीनों के बाद ला पा रहा हूं। सेहत और मन:स्थिति प्रतिकूल होने की वजह से यह देरी हुई है। हमारे ऑनलाइन प्रकाशक नीलाभ श्रीवास्तव तो लगभग हर 10-12 दिन पर इसे पूरा करने की सलाह देते रहे। उन्हें हां-हां करने के बावजूद सही स्थिति नहीं बता सका था। अब तो उन्हें भी मालूम है।

बहरहाल, नवंबर, 2025 का अंक मार्च, 2026 में आपके स्क्रीन पर दिख रहा है। इस अंक को हमने राज कपूर पर केंद्रित किया था। तैयारी के समय समय से हमारे नियमित लेखकों के साथ कुछ नए-नए होने भी अपनी सामग्रियां भेज दी थीं। कुछ लेखकों ने आश्वासन दिए थे। इस देरी के बावजूद उनके लेख नहीं आ पाए। नवंबर महीने के अंत में ही हम सभी के प्रिय अभिनेता धर्मेंद्र का निधन हुआ। उनकी स्मृति में हमने इस अंक के कुछ पृष्ठ उनके संस्मरणों और लिखो के लिए समर्पित किए। इन लिखो में आप धर्मेंद्र को उनकी बहुमुखी प्रतिभा के साथ-साथ लोकप्रिय अंदाज में भी पढ़ पाएंगे।

कोशिश तो यही रहती है कि आपको अच्छी और पर्याप्त सामग्रियां मिल जाएं। हमारे पिछले कुछ अंकों को आपने बहुत पसंद किया और कुछ को नजरअंदाज भी

किया। हर पत्रिका के जीवन काल में पाठकों की ऐसी प्रतिक्रियाएं मिलती रहती हैं। पसंद से प्रोत्साहन मिलता है। नजरअंदाज से सबक। दोनों ही स्थितियां पत्रिका के सेहत और कलेवर के लिए कारगर रहती हैं।

बगैर किसी आर्थिक आज सांस्थानिक सहायता के सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन का 23 वां अंक आ रहा है। अगले अंक के साथ 2 साल पूरे हो जाएंगे। 24 अंकों के इस सफर के बाद इस दिन को थोड़ा विराम और विश्राम दे रहा हूं।

अगली कोशिश यह है कि यह ईपत्रिका नए अंदाज में आपके लिए उपयोगी रूप में प्रकाशित हो। या नया रूप और प्रारूप क्या हो सकता है? इस संबंध में आपकी सलाह बहुत महत्वपूर्ण होगी।

बाकी उम्मीद है कि हमेशा की तरह आपका स्नेह और प्यार इस अंक को भी मिलेगा। इस पत्रिका के नियमित प्रकाशन में नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा का सहयोग और योगदान मिलता रहा है।

पिछले कुछ अंकों से इसका कवर रविराज पटेल तैयार कर रहे हैं। अपने व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर वे इस काम को अंजाम देते हैं। उन्हें अलग से धन्यवाद!

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें।

अजय ब्रह्मात्मज

मार्च 2026

मुंबई

'आवारा' से सोवियत संघ तक लोकप्रिय हो गए राज कपूर

अखिलेश कुमार मौर्य

'आवारा' (1951) एक सामाजिक-रोमांटिक फिल्म है, जिसे राज कपूर ने निर्देशित और अभिनीत किया। यह फिल्म भारतीय समाज में वर्ग संघर्ष, गरीबी और न्याय की अवधारणाओं को मनोरंजक लेकिन गहन रूप से प्रस्तुत करती है। 'आवारा हूँ' गीत इस फिल्म की पहचान बन गया, जो एक व्यक्ति की नियति, समाज की असमानताओं और आत्म-खोज को दर्शाता है। भारतीय सिनेमा के 'शोमैन' कहे जाने वाले राज कपूर ने इस फिल्म के माध्यम से एक ऐसा पात्र गढ़ा, जिसने न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी दर्शकों के दिलों को छुआ। ख्वाजा अहमद अब्बास की सशक्त पटकथा और शंकर-जयकिशन के मधुर संगीत ने इसे और प्रभावशाली बनाया।

इस फिल्म की कहानी राज कपूर के चारों तरफ़ घूमती है जो एक झोपड़पट्टी में अपनी माँ के साथ रहता है जिसे उसके अमीर जज पति (पृथ्वीराज कपूर) ने एक शक के आधार पर अपने घर से निकाल दिया है। युवा राज को जिसकी भूमिका शशि कपूर ने निभाई थी, सिर्फ़ इसलिए स्कूल से निकाल दिया जाता है क्योंकि उसने अपनी दाल रोटी के लिए बूट पॉलिश करना शुरू कर दिया था। चोरी करने और लोगों से ठगी करने के लिए मजबूर राज एक अपराधी बन जाता है। हालात ऐसे बनते हैं कि वो डाकू

जग्गा (के एन सिंह) को जान से मार देता है. अपने पिता की अदालत में उसका मुक़दमा चलाता है जहाँ रीता (नरगिस दत्त) उसका मुक़दमा लड़ती है। इस बीच राज की माँ की मौत हो जाती है. उसको अपने पिता की पहचान पता चल जाती है और राज को तीन साल की सज़ा के साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

राज कपूर की बेटी ऋतु नंदा ने अपनी किताब 'राज कपूर द वन एंड ओनली शोमैन' में लिखती हैं, "आवारा' की कहानी की थीम थी वर्ग भेद जिसमें एक रोमाँटिक कहानी को उस गरीबी में लपेट कर दिखाया गया था जो भारत को आज़ादी के बाद मिली थी। ये फ़िल्म कीचड़ में कमल के फूल की तरह प्रस्फुटित हुई थी। तब तक इस तरह की फ़िल्म से लोगों का वास्ता नहीं पड़ा था। ये फ़िल्म एक तरह से गणराज्य की मासूमियत का जश्न मनाती थी जो नया नया पैदा हुआ था और इस मुश्किल दुनिया का सामना करना सीख रहा था।’’

राज कपूर की निर्देशन शैली इस फिल्म में अपनी संपूर्णता के साथ उभरकर आती है। उन्होंने चार्ली चैपलिन की ‘द ट्रैम्प’ शैली से प्रेरणा लेते हुए राज के किरदार को विकसित किया, जिसमें एक आवारा की मासूमियत, करुणा और सामाजिक अन्याय के खिलाफ उसका संघर्ष दिखाई देता है। फिल्म की सिनेमेटोग्राफी अपने समय से काफी आगे थी। प्रकाश और छाया का उपयोग पात्रों की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया। कोर्टरूम के दृश्यों में प्रकाश व्यवस्था न्याय और अन्याय के द्वंद्व को